दुर्गा

विवेक मिश्र

परिचय-विवेक मिश्र

15 अगस्त 1970 में उत्तर प्रदेश के झांसी शहर में जन्म। विज्ञान में स्नातक, दन्त स्वास्थ विज्ञान में विशेष शिक्षा, पत्रकारिता एवं जनसंचार में स्नात्कोत्तर। दो कहानी संग्रह-'हनियाँ तथा अन्य कहानियाँ' एवं 'पार उतरना धीरे से' प्रकाशित। तीसरा कहानी संग्रह- 'ऐ गंगा तुम बहती हो क्यूँ?' शीध्र प्रकाश्य। लगभग सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में कविताएं व कहानियाँ प्रकाशित। कुछ कहानियाँ संपादित संग्रहों व स्नातक स्तर के पाठ्यक्रमों में शामिल। साठ से अधिक वृत्तचित्रों की संकल्पना एवं पटकथा लेखन। 'light through a labyrinth' शीर्षक से कविताओं का अंग्रेजी अनुवाद राईटर्स वर्कशाप, कलकत्ता से तथा कहानिओं का बंगला अनुवाद डाना पब्लिकेशन, कलकत्ता से प्रकाशित।

संपर्क- 123-सी, पाकेट-सी, मयूर विहार फेज़-2, दिल्ली-91

मो;-9810853128

ईमेल;- vivek_space@yahoo.com

दुर्गा

दशहरे की धूम यूँ तो हर साल ही होती थी, पर इस बार दशहरे का इन्तज़ार नौ साल के ज्ञान को सबसे ज़्यादा था। नौ के नौ नवरात्र, बिना नागा, वह दुर्गा के दर्शन करने जाता। इतनी श्रद्धा उसके मन में पहले कभी नहीं उमड़ी थी। यह नौ दिन कैसे बीते थे, ज्ञान ही जानता था। आख़िरकार, आज दशहरा आ गया था।

वह सुबह से बड़ा बेचैन था, पर दिन कटने का नाम ही नहीं ले रहा था। वह सुबह से, गली के नुक्कड़ पर बैठा, चौड़ी सड़क को ताक रहा था, जिस पर से शाम होते ही दुर्गा की शहर भर में स्थापित मूर्तियाँ विसर्जन के लिए चल पड़ती थीं। हज़ारों लोगों की भीड़ सड़कों के किनारे जमा हो जाती, लोग मकानों की छतों पर, दुकानों के आगे बढ़ाए गए दासों पर, दोपहर बाद से ही दुर्गा की शोभायात्रा देखने के लिए, आकर बैठ जाते। इन्तज़ार में बैठे लोग खाते-बतियाते और ढेर सारा कचरा सड़क पर बिखर जाता, जैसे-जैसे शाम होने लगती, गहमा-गहमी और बढ़ जाती। यह लगभग वैसी ही होती, जैसी ताजिए निकलने पर हुआ करती, फ़र्क़ सिर्फ़ हिन्दू-मुसलमान का था, अन्यथा सब एक जैसा, वही भीड़, वही उन्माद, वही कचरा और अन्त में कीचड़ से लबालब लक्ष्मी तालाब, जिसमें विसर्जित होती दुर्गा और उसी में सिराए जाते ताजिए।

ताजियों और दुर्गा की मूर्तियों की संख्या लगभग समान अनुपात में, हर साल बढ़ती और छोटा पड़ता जाता लक्ष्मी तालाब।

ज्ञान की आतुरता समय के साथ बढ़ती जाती। वह अम्मा से बार-बार कहता, सड़क पर जाकर दुर्गा देखने के लिए। अम्मा त्यौहार के समय आम